अपने इन प्रयत्नों द्वारा उत्पत्ति के क्षेत्र में उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता को रोकता है तथा उत्पत्ति वृद्धि की प्रवृत्ति को जन्म देता है। इस प्रकार प्रकृति का पक्ष उत्पत्ति ह्रास तथा मानव का पक्ष उत्पत्ति वृद्धि की प्रवृत्ति को जन्म देता है।

निष्कर्ष :- किन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि निर्माण-उद्योगों में केवल उत्पत्ति वृद्धि नियम तथा प्राथमिक उद्योगों में केवल उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता होती है। वास्तव में जैसा कि हम पहले देख चुके हैं, उत्पत्ति ह्रास नियम अर्थशास्त्र का एक सार्वभौमिक नियम है तथा उत्पादन के प्रत्येक क्षेत्र में अवश्य लागू होता है यह नियम केवल कृषि एवं खनिज उद्योगों में ही नहीं अपितु निर्माण तथा वाणिज्य के क्षेत्र में भी लागू होता है। इसका प्रधान कारण यह है कि आज के आर्थिक युग में प्रकृति का ~~सर्वप्रथम~~ सर्वत्र महत्वपूर्ण स्थान है। निर्माण उद्योग में भी जहाँ पर मानवीय प्रयत्नों की प्रधानता है प्रकृति का स्थान कम महत्वपूर्ण नहीं है। इसी प्रकार यद्यपि कृषि के क्षेत्र में प्रकृति की प्रधानता रहती है फिर भी इस क्षेत्र ~~का स्थान~~ में मानव अपने प्रयत्नों द्वारा प्रकृति की अनिश्चितताओं को कमकर उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता को रोकता है। किन्तु उत्पत्ति के किसी भी क्षेत्र में मनुष्य आयोजित प्रयत्नों द्वारा थोड़े समय के लिए उत्पत्ति ह्रास नियम की क्रियाशीलता को स्थगित कर सकता है इसे सदा के लिए नहीं टाल सकता है। इस प्रकार क्रमागत उत्पत्ति ह्रास नियम ही उत्पादन का एक आधारभूत सार्वभौमिक एवं अटल नियम है।

Lecture No - 39

B.A Degree I Economics Hons.

Paper - 1st

Dated - 27.5.2020

Dr. R. N. Tiwari
Dept. of Economics
A.N.D.C. Shahpur Patory

Scanned with CamScanner

(4) प्रकृति की बहुत सी शक्तियाँ विनाशकारी प्रकृति की होती हैं जैसे बाढ़, भूकम्प, वर्षा इत्यादि इनके चलते भी प्राथमिक उद्योगों में मुख्यतया उत्पत्ति ह्रास नियम की प्रवृत्ति पायी जाती है।

(5) प्राकृतिक शक्तियों पर निर्भर होने के कारण प्राथमिक उद्योगों में अनिश्चितता की मात्रा अधिक पायी जाती है, जैसे भारत में कृषि की प्रधानता है और यहाँ की कृषि वर्षा पर निर्भर करती है परन्तु वर्षा की प्रकृति बहुत ही अनिश्चित होती है जिस वर्ष वर्षा खूब हुआ कृषि फसल अच्छी होती है और वर्षा नहीं होने की स्थिति में कृषि फसल खराब हो जाती है इस अनिश्चितता के कारण भी इन उद्योगों में उत्पत्ति ह्रास नियम शीघ्र क्रियाशील होने लगता है।

मनुष्य के कारण उत्पादन में वृद्धि क्यों होती है? :- इसके विपरीत उत्पत्ति के उन क्षेत्र में जहाँ मानव की प्रधानता होती, उत्पत्ति वृद्धि नियम लागू होता है इसके भी निम्नलिखित कारण हैं -

(1) मानव अपने सतत् प्रयोगों एवं निरन्तर अन्वेषणों द्वारा उत्पादन की उन्नतशील प्रणालियों को जन्म देता है। मानव अपने प्रयत्नों द्वारा नित्य नये-नये आविष्कारों से उत्पत्ति के नये-नये तरीके का जन्म देता है जिससे उत्पत्ति वृद्धि नियम क्रियाशील होता है।

(2) प्रकृति के विनाशकारी शक्तियों को भी मानव नियंत्रित करता है:- इतना ही नहीं मानव अपने कोशिशों के द्वारा प्रकृति की विनाशकारी शक्तियों को भी नियंत्रित करता है तथा उनके प्रतिकूलता को अनुकूलता में बदलकर उत्पादन में वृद्धि की प्रवृत्ति को जन्म देता है। उदाहरण के लिए, नदियों में बाँध का निर्माण कर बाढ़ की विभीषिका को कम करता है कृषि के क्षेत्र में वर्षा की अनिश्चितता को दूर करने के लिए सिंचाई की कृत्रिम तरीकों का प्रयोग करता है इत्यादि।

इस प्रकार मानव अपने इन प्रयत्नों द्वारा उत्पत्ति

Lecture No - 39

Dr. R.M. Tiwari
Deptt of Economics
A.N.D.C Shahpur Patori

B.A. Degree I Economics Hons. Paper - 1st.

Date 27.5.2020

Name of Topic - उत्पत्ति ह्रास एवं उत्पत्ति वृद्धि नियमों का तुलनात्मक अध्ययन (Diminishing Returns and increasing Returns Compared)

उत्पत्ति के तीन नियमों में उत्पत्ति ह्रास नियम एवं उत्पत्ति वृद्धि नियम ही प्रमुख है। साधारणतया यह देखा जाता है कि उत्पत्ति वृद्धि नियम की प्रवृत्ति उत्पादन के आरम्भ में शुरु होती है और इसके बाद उत्पत्ति ह्रास की प्रवृत्ति शुरु होती है। प्रो० मार्शल ने इन नियमों की क्रियाशीलता के संबंध में अपना विचार इस प्रकार से व्यक्त किया है; उत्पत्ति के क्षेत्र में जहाँ प्रकृति की प्रधानता रहती है उत्पत्ति ह्रास नियम तथा जहाँ पर मनुष्य की प्रधानता रहती है वहाँ पर उत्पत्ति वृद्धि नियम क्रियाशील होता है (We may broadly say that while the part which nature play in Production show a tendency to Diminishing Returns, the Part which man play shows tendency to increasing Returns.)

प्रकृति के परिणामस्वरूप उत्पादन में क्रमशः ह्रास होता है, मार्शल का यह कथन वास्तव में बिलकुल निराधार नहीं है। उत्पादन के उस क्षेत्र में जहाँ प्रकृति की प्रधानता रहती है उत्पत्ति ह्रास नियम के चरितार्थ होने के निम्नलिखित कारण हैं :—

(1) सर्वप्रथम प्रकृति की देन सीमित होती है — जैसे भूमि, खनिज पदार्थ, जंगल आदि की मात्रा पूर्व निश्चित रहती है, इसमें कोई वृद्धि संभव नहीं है। अतएव उत्पत्ति की मात्रा में वृद्धि के लिए इन्हीं साधनों का अधिक से अधिक प्रयोग करना पड़ता है जिससे इनकी स्थायी शक्ति पर प्रभाव पड़ता है और धीरे-धीरे कम होने लगती है और उत्पत्ति में क्रमशः ह्रास होने लगता है